NEXUS UNIVERSAL JOURNAL ISSN: 3108-0367

www.nujournal.in DOI: 10.68013/nuj.

Volume 2, Issue IV: July-August, 2026 (Page:1-11)

Received: August14, 2026; Received in revised form: August19, 2026; Accepted: August24, 2026; Published: August 31, 2026

ज्ञान, स्वास्थ्य और समाज: 20वीं सदी में मारवाड़ रियासत में शिक्षा एवं चिकित्सा संस्थाओं के विकास का सामाजिक प्रभाव

डॉ. रीतू चौधरी

सहायक आचार्य, गेस्ट फैकल्टी – इतिहास विभाग

एस.पी.एम. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपालगढ़, जोधपुर

सारांश *:*

सामाजिक परिवर्तन, संस्थागत पुनर्गठन और आधुनिक चेतना का प्रसार—20वीं सदी में मारवाड़ रियासत को आकार देने वाले सामाजिक इतिहास के कुछ पहलुओं में यह दिखाई दिया। मदरसों और धार्मिक शिक्षा के अलावा, आधुनिक स्कूलों, माध्यमिक शिक्षा, कॉलेजों तथा व्यावसायिक–तकनीकी शिक्षा जैसे गैर-परंपरागत शैक्षिक मार्गों में भी विस्तार किया गया। प्राथमिक शिक्षा का विस्तार 1923 में हुआ, जबकि मारवाड़ मिडिल स्कूल की परीक्षा 1925 से शुरू की गई। 1935–36 में पाठ्यक्रम में कृषि, बढ़ईगीरी, टेलरिंग कला, स्वास्थ्य-संरक्षण और निःस्वार्थ सेवा जैसे व्यावहारिक विषयों को शामिल किया गया। चिकित्सा क्षेत्र में भी बदलाव हुए और 1904 तक कार्यरत 24 अस्पताल तथा 8 औषधालय थे। 1932 में विंधम अस्पताल, 1936 में स्वास्थ्य विभाग और 1938 में उमेद महिला अस्पताल जैसी संस्थाओं ने आधुनिक जागरूकता तो पैदा की, लेकिन वे ग्रामीण और निर्धन समूहों तथा महिलाओं को सहायता उपलब्ध कराने में विफल रहीं।

बीज शब्दः– मारवाड़, शिक्षा, चिकित्सा, आधुनिकता, सामाजिक परिवर्तन, महिला शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, जोधपुर, रियासती प्रशासन।

ISSN: 3108-0367 DOI: https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.4

प्रस्तावना-

राजस्थान की रियासतों का आधुनिक इतिहास केवल राजनीतिक घटनाओं और राजवंशीय परिवर्तन का इतिहास नहीं है। सामाजिक संस्थाओं के विकास को समझे बिना इन क्षेत्रों में हुए व्यापक परिवर्तन की वास्तविक प्रकृति स्पष्ट नहीं हो सकती। 19वीं सदी के अंतिम दशकों से लेकर 20वीं सदी के मध्य तक राजस्थान की विभिन्न रियासतों में प्रशासनिक संरचनाओं के साथ शिक्षा, चिकित्सा, संचार, परिवहन और नगर प्रशासन से संबंधित संस्थाओं का क्रमिक विकास हुआ। मारवाड़ इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। जोधपुर को केंद्र बनाकर विकसित मारवाड़ राज्य का सामाजिक जीवन लंबे समय तक कृषि, पशुपालन, व्यापार, जातीय-सामुदायिक संरचनाओं और परंपरागत संस्थाओं पर आधारित रहा। शिक्षा का स्वरूप भी इसी सामाजिक संरचना से प्रभावित था। स्थानीय पाठशालाएँ, संस्कृत शिक्षा, धार्मिक संस्थाएँ और निजी शिक्षक ज्ञान के प्रमुख माध्यम थे। चिकित्सा के क्षेत्र में वैद्य, हकीम और स्थानीय उपचार-पद्धतियाँ लोगों की प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करती थीं। किंतु आधुनिक प्रशासन के विस्तार के साथ ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता अनुभव की गई जो राज्य के प्रशासनिक, आर्थिक और सामाजिक उद्देश्यों को पूरा कर सकें। 20वीं सदी में यही आवश्यकता विद्यालयों, महाविद्यालयों, अस्पतालों और औषधालयों के विस्तार का आधार बनी। शिक्षा अब केवल धार्मिक या पारंपरिक ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं रही, बल्कि प्रशासन, रोजगार और सामाजिक उन्नति से जुड़ने लगी। इसी प्रकार चिकित्सा व्यवस्था का उद्देश्य केवल रोगी का उपचार करना नहीं रहा; टीकाकरण, स्वच्छता, रोग-निवारण और सार्वजनिक स्वास्थ्य जैसी अवधारणाएँ भी प्रशासनिक नीति का हिस्सा बनने लगीं। इस परिवर्तन को केवल "पश्चिमीकरण" के रूप में देखना भी उचित नहीं होगा। मारवाड़ की आधुनिक संस्थाएँ परंपरागत सामाजिक व्यवस्था के साथ निरंतर संवाद करती हुई विकसित हुईं। आधुनिक विद्यालयों में भारतीय भाषाओं तथा पारंपरिक शिक्षा संस्थाओं का अस्तित्व बना रहा। चिकित्सा क्षेत्र में भी आधुनिक चिकित्सा के साथ स्थानीय उपचार-पद्धतियाँ लंबे समय तक समाज में प्रचलित रहीं। इस प्रकार संस्थागत परिवर्तन एक क्रमिक और मिश्रित प्रक्रिया थी।

अध्ययन के उद्देश्य-

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. 20वीं सदी में मारवाड़ की शिक्षा व्यवस्था में आए संस्थागत परिवर्तनों का अध्ययन करना।

2. प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा के विस्तार को समझना।

3. शिक्षा में व्यावसायिक एवं व्यावहारिक विषयों के समावेश का विश्लेषण करना।

4. महिला शिक्षा के विकास तथा उसके सामाजिक प्रभाव का अध्ययन करना।

5. अस्पतालों, औषधालयों और सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थाओं के विकास को रेखांकित करना।

6. टीकाकरण तथा रोग-निवारण संबंधी प्रयासों का अध्ययन करना।

ISSN: 3108-0367 DOI: https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.4

7. शिक्षा और चिकित्सा संस्थाओं के सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव का विश्लेषण करना।

8. नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच संस्थागत पहुँच की असमानता को समझना।

9. जाति एवं समुदाय आधारित शैक्षिक पहलों की भूमिका का अध्ययन करना।

10. शिक्षा एवं चिकित्सा को मारवाड़ में आधुनिक सामाजिक चेतना के विकास के माध्यम के रूप में देखना।

शोध-पद्धति एवं स्रोत-

प्रस्तुत अध्ययन ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में मारवाड़ राज्य की प्रशासनिक रिपोर्टें, शिक्षा विभाग से संबंधित अभिलेख, चिकित्सा एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी विवरण तथा समकालीन गजेटियर प्रमुख हैं। विश्वेश्वरनाथ रेउ का मारवाड़ का इतिहास इस अध्ययन का महत्वपूर्ण स्रोत है। इसके दूसरे भाग में शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था के विकास से संबंधित अनेक समकालीन विवरण उपलब्ध हैं। " ग्रंथ के शिक्षा संबंधी भाग में 1923 में प्राथमिक शिक्षा के विस्तार, 1925 में मिडिल स्कूल परीक्षा तथा 1935–36 में व्यावहारिक विषयों के समावेश का विवरण मिलता है।"[1] चिकित्सा व्यवस्था के लिए Imperial Gazetteer of India विशेष उपयोगी है। इसमें 1904 के आसपास राज्य की चिकित्सा संस्थाओं, उपचार प्राप्त करने वाले रोगियों तथा टीकाकरण की स्थिति का विवरण मिलता है। इसके अतिरिक्त Archibald Adams की The Western Rajputana States तथा आधुनिक इतिहासकारों के ग्रंथों का उपयोग संदर्भात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन के लिए किया गया है। इस प्रकार स्रोतों के आधार पर संस्थागत विकास को केवल प्रशासनिक आँकड़ों के रूप में नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में समझने का प्रयास किया गया है।

20वीं सदी के प्रारंभ में मारवाड़ का सामाजिक परिवेश-

20वीं सदी के आरंभ में मारवाड़ का समाज विविध जातीय, धार्मिक और व्यावसायिक समूहों से मिलकर बना था। ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार कृषि और पशुपालन था, जबकि जोधपुर सहित प्रमुख नगरों में व्यापार, प्रशासन और शिल्प गतिविधियों का महत्व बढ़ रहा था। सामाजिक जीवन पर परिवार, जाति, समुदाय और परंपरा का प्रभाव व्यापक था। ऐसी सामाजिक संरचना में शिक्षा का वितरण समान नहीं था। शिक्षा प्राप्त करने के अवसर मुख्यतः सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति से प्रभावित होते थे। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्तर की शिक्षा की उपलब्धता सीमित थी और बालिकाओं की शिक्षा को लेकर सामाजिक संकोच अधिक था। जोधपुर नगर की स्थिति अपेक्षाकृत भिन्न थी। राज्य की राजधानी होने के कारण यहाँ प्रशासनिक कार्यालय, व्यापारिक गतिविधियाँ और विभिन्न प्रकार की सेवाएँ विकसित हो रही थीं। परिणामतः ऐसे शिक्षित लोगों की आवश्यकता बढ़ी जो प्रशासनिक कार्यालयों, विद्यालयों, न्यायिक संस्थाओं

[1] विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 2, जोधपुर, पुरातत्त्व विभाग, 1940, पृ. 624. शिक्षा विभाग संबंधी विवरण में 1923 में प्राथमिक शिक्षा के विस्तार का उल्लेख।

ISSN: 3108-0367 DOI: https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.4

और अन्य विभागों में कार्य कर सकें। इस प्रकार शिक्षा का विकास सामाजिक आवश्यकता और प्रशासनिक आवश्यकता—दोनों से जुड़ गया। यह परिवर्तन महत्वपूर्ण था क्योंकि इससे शिक्षा को पारंपरिक ज्ञान के साथ रोजगार और सामाजिक गतिशीलता से भी जोड़ा जाने लगा।

परंपरागत शिक्षा से आधुनिक शिक्षा की ओर संक्रमण- मारवाड़ में आधुनिक शिक्षा के विकास से पहले ज्ञान-संरचना अनेक स्थानीय संस्थाओं पर आधारित थी। संस्कृत पाठशालाएँ धार्मिक एवं शास्त्रीय अध्ययन की परंपरा को बनाए हुए थीं। हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं की पाठशालाएँ भी प्राथमिक शिक्षा प्रदान करती थीं। निजी शिक्षकों और परिवार आधारित शिक्षा की भी अपनी भूमिका थी। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था ने इस संरचना को तत्काल समाप्त नहीं किया। बल्कि एक समय तक दोनों व्यवस्थाएँ समानांतर रूप से चलती रहीं। इसका प्रमाण इस तथ्य से मिलता है कि 20वीं सदी के मध्य तक मारवाड़ में संस्कृत पाठशालाओं के साथ राजकीय, सहायता प्राप्त तथा मान्यता प्राप्त विद्यालय भी मौजूद थे। यहाँ आधुनिक शिक्षा का अर्थ केवल अंग्रेजी भाषा का प्रसार नहीं था। गणित, प्रशासनिक ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी कार्य, स्वास्थ्य और व्यावसायिक दक्षताओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रयास किया गया। इससे शिक्षा का उद्देश्य व्यापक हुआ। 1923 में शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक कदम उठाया गया। विश्वेश्वरनाथ रेउ लिखते हैं— "राजकीय काउंसिल ने प्राथमिक शिक्षा की वृद्धि का प्रस्ताव अंगीकार..."[2] यह छोटा-सा प्रशासनिक निर्णय वास्तव में शिक्षा को राज्य की प्राथमिकताओं से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत था। प्राथमिक शिक्षा का विस्तार आधारभूत स्तर पर शिक्षित जनसंख्या तैयार करने की आवश्यकता को स्वीकार करता था।

माध्यमिक शिक्षा और पाठ्यक्रम में परिवर्तन-

1925 में मारवाड़ मिडिल स्कूल परीक्षा की स्थापना शिक्षा व्यवस्था के संस्थागत विकास का एक महत्वपूर्ण चरण थी। इससे माध्यमिक स्तर की शिक्षा के लिए एक अधिक व्यवस्थित मूल्यांकन प्रणाली विकसित हुई। 1935–36 में शिक्षा के स्वरूप में एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता है। पाठ्यक्रम में बढ़ईगीरी, दर्जी का काम, चित्रांकन, चमड़े का काम, जिल्दसाजी, कृषि, स्वास्थ्य-रक्षा और स्वयंसेवा जैसे विषयों को स्थान दिया गया। इस परिवर्तन का महत्व केवल पाठ्यक्रम विस्तार तक सीमित नहीं था। इससे शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने का प्रयास स्पष्ट होता है। विद्यार्थी को केवल पुस्तक-आधारित ज्ञान देने के बजाय ऐसी दक्षताओं से जोड़ने का प्रयास किया गया जो भविष्य में रोजगार या स्वावलंबन में सहायक हो सकती थीं। विशेष रूप से स्वास्थ्य-रक्षा तथा स्वयंसेवा का पाठ्यक्रम में प्रवेश शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व के बीच संबंध स्थापित करता था। विद्यार्थी को समाज का निष्क्रिय सदस्य न मानकर सामुदायिक जीवन में योगदान करने वाला व्यक्ति तैयार करने की सोच यहाँ दिखाई देती है।

---

[2] वही, पृ. 624. मूल पाठ में 1923 में प्राथमिक शिक्षा के विस्तार संबंधी प्रस्ताव का उल्लेख।

ISSN: 3108-0367 DOI: https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.4

उच्च शिक्षा और शिक्षित वर्ग का निर्माण-

उच्च शिक्षा के विकास ने मारवाड़ में सामाजिक परिवर्तन को एक अलग दिशा प्रदान की। जसवंत कॉलेज की स्थापना 1893 में हुई और 1896 में इसकी शिक्षा को बी.ए. स्तर तक विकसित किया गया। इससे 20वीं सदी के आरंभ में उच्च शिक्षा के लिए संस्थागत आधार उपलब्ध हो गया। उच्च शिक्षा का प्रभाव केवल विद्यार्थियों की संख्या तक सीमित नहीं था। इससे राज्य में एक नया शिक्षित वर्ग विकसित हुआ। यह वर्ग प्रशासन, शिक्षा, न्याय, चिकित्सा तथा अन्य आधुनिक सेवाओं में प्रवेश करने लगा। शिक्षा और रोजगार का यह संबंध सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। जिस समाज में सामाजिक प्रतिष्ठा परंपरागत पदानुक्रम से निर्धारित होती थी, वहाँ आधुनिक शिक्षा ने योग्यता और सरकारी सेवा को सामाजिक उन्नति के नए माध्यमों में बदलना शुरू किया। इस प्रक्रिया ने सामाजिक गतिशीलता को भी प्रभावित किया। हालांकि इसका लाभ प्रारंभ में सभी समुदायों को समान रूप से नहीं मिला, फिर भी शिक्षा ने सामाजिक प्रतिष्ठा के पारंपरिक आधारों के अतिरिक्त एक नया आधार उपलब्ध कराया।

शिक्षा का विस्तार : संस्थागत परिदृश्य-

रेउ के विवरण से स्पष्ट होता है कि 20वीं सदी के तीसरे दशक के बाद मारवाड़ में शिक्षा संस्थाओं का पर्याप्त विस्तार हुआ था। उनके अनुसार एक समय राज्य में लड़कों के 180 और लड़कियों के 35 विद्यालय थे। "इनमें राजकीय, सहायता प्राप्त और मान्यता प्राप्त विद्यालयों के साथ संस्कृत पाठशालाएँ भी शामिल थीं।"[3] उसी विवरण में पाँच हाई स्कूलों में 2,562 विद्यार्थियों तथा कॉलेज में 234 विद्यार्थियों का उल्लेख मिलता है। समस्त विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या 23,195 बताई गई है। ये आँकड़े केवल संस्थाओं की संख्या नहीं बताते; वे राज्य में शिक्षा को लेकर बदलती प्राथमिकताओं की ओर संकेत करते हैं। शिक्षा का विस्तार अब सीमित शहरी अभिजात वर्ग तक नहीं रहा था। यद्यपि ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी पहुँच अभी भी असमान थी, फिर भी परगना स्तर तक विद्यालयों का विस्तार हो रहा था। इस चरण में राज्य का शिक्षा पर आर्थिक व्यय भी बढ़ा। रेउ ने वार्षिक शिक्षा व्यय लगभग 2,13,000 रुपये बताया है। इससे शिक्षा के क्षेत्र में राज्य की बढ़ती संस्थागत भूमिका स्पष्ट होती है।

महिला शिक्षा का विकास-

मारवाड़ में महिला शिक्षा का इतिहास पुरुष शिक्षा की तुलना में अधिक जटिल रहा। सामाजिक रूढ़ियों, पर्दा-प्रथा, बाल विवाह और महिलाओं की घरेलू भूमिका संबंधी धारणाओं के कारण बालिकाओं की शिक्षा को सामाजिक स्वीकृति मिलने में समय लगा। जोधपुर में बालिका विद्यालय की स्थापना 1886 में हुई थी। इससे 20वीं सदी में महिला शिक्षा के विस्तार के लिए आधार तैयार हुआ। महिला शिक्षा के विकास का महत्व इस तथ्य में था कि इससे महिलाओं की भूमिका केवल घरेलू क्षेत्र तक सीमित रहने के बजाय शिक्षण, सामाजिक सेवा और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों से जुड़ने की संभावनाएँ उत्पन्न हुईं। "रेउ के विवरण में 35 बालिका विद्यालयों का उल्लेख मिलता है। इनमें 26 राजकीय तथा 6

[3] विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 2, पृ. 624.

ISSN: 3108-0367 DOI: https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.4

सहायता प्राप्त विद्यालय बताए गए हैं; 14 विद्यालय जोधपुर नगर में तथा 21 परगनों में स्थित थे। इन विद्यालयों में 3,220 बालिकाएँ शिक्षा प्राप्त कर रही थीं।"[4] यह आँकड़ा महिला शिक्षा की दिशा में उल्लेखनीय विस्तार को दर्शाता है, लेकिन इसे पूर्ण समानता का प्रमाण नहीं माना जा सकता। विद्यालयों की उपलब्धता बढ़ने के बावजूद सामाजिक दृष्टिकोण, आर्थिक स्थिति और ग्रामीण क्षेत्रों की परिस्थितियाँ बालिकाओं की शिक्षा को प्रभावित करती रहीं।

समुदाय और शिक्षा-

मारवाड़ में आधुनिक शिक्षा के विकास में विभिन्न समुदायों की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही। शिक्षा को केवल राज्य द्वारा संचालित कार्यक्रम के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। अनेक समुदायों ने अपने सामाजिक विकास के लिए आधुनिक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना अथवा सहायता की। विशेष रूप से मुस्लिम समुदाय में आधुनिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए 1929 में मारवाड़ मुस्लिम एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना का उल्लेख मिलता है। संस्था का उद्देश्य मुस्लिम समुदाय में आधुनिक शिक्षा का प्रसार करना था। इस प्रकार शिक्षा संस्थाओं का विकास सामाजिक समूहों के भीतर आत्म-संगठन की प्रक्रिया से भी जुड़ा था। समुदायों ने यह अनुभव करना शुरू किया कि आधुनिक प्रशासनिक एवं आर्थिक व्यवस्था में आगे बढ़ने के लिए शिक्षा आवश्यक है। यहाँ शिक्षा सामाजिक प्रतिस्पर्धा और सामाजिक सुधार—दोनों का साधन बनती दिखाई देती है। विभिन्न समुदायों द्वारा विद्यालय स्थापित करने या शिक्षा को प्रोत्साहित करने के प्रयासों ने राज्य की शिक्षा व्यवस्था को सामाजिक आधार भी प्रदान किया।

चिकित्सा व्यवस्था : परंपरा से संस्थागत चिकित्सा की ओर मारवाड़ में चिकित्सा व्यवस्था का विकास भी शिक्षा की तरह क्रमिक था। ग्रामीण और स्थानीय समाज में वैद्य, हकीम तथा घरेलू उपचार लंबे समय तक स्वास्थ्य-व्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग रहे। आधुनिक अस्पतालों और औषधालयों की स्थापना ने उपचार को अधिक संगठित एवं संस्थागत रूप देना प्रारंभ किया।। आसपास चिकित्सा प्रशासन का संस्थागत विकास-

चिकित्सा व्यवस्था को संगठित करने की दिशा में प्रशासनिक परिवर्तन भी हुए। 1925 से मारवाड़ दरबार ने अपना स्वतंत्र "प्रिंसिपल मेडिकल ऑफिसर" नियुक्त किया। इस नियुक्ति का महत्व चिकित्सा प्रशासन की स्वतंत्र पहचान में था। इससे चिकित्सा व्यवस्था केवल किसी बाहरी प्रशासनिक अधिकारी की निगरानी पर निर्भर रहने के बजाय राज्य की अपनी संस्थागत व्यवस्था का हिस्सा बनी। चिकित्सा विभाग के विस्तार के साथ राज्य के आर्थिक संसाधनों का उपयोग भी बढ़ा। विश्वेश्वरनाथ रेउ के अनुसार इस विभाग पर वार्षिक व्यय लगभग 5,08,000 रुपये तक पहुँच गया था। इस प्रकार चिकित्सा को राज्य की सार्वजनिक जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार किए जाने की प्रक्रिया स्पष्ट होती है।

[4] विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 2, पृ. 624.

ISSN: 3108-0367 DOI: https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.4

विंढम अस्पताल और आधुनिक चिकित्सा-

9 सितंबर 1932 को विंढम अस्पताल का उद्घाटन आधुनिक चिकित्सा संस्थागत विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण घटना थी।। " रेउ के मूल विवरण में भी अस्पताल के साथ प्रयोगशाला और एक्स-रे सुविधा के विकास का उल्लेख मिलता है।"[5] यह परिवर्तन चिकित्सा पद्धति की प्रकृति में बदलाव का संकेत देता है। बीमारी की पहचान और उपचार अब केवल चिकित्सक के अनुभव या रोगी के लक्षणों पर निर्भर नहीं रह गए थे। प्रयोगशाला और एक्स-रे जैसी तकनीकों ने चिकित्सा को वैज्ञानिक परीक्षणों से जोड़ने की दिशा में कदम बढ़ाया। इसका सामाजिक प्रभाव भी महत्वपूर्ण था। आधुनिक चिकित्सा संस्थाओं ने लोगों में बीमारी के प्रति नई समझ विकसित करने की संभावनाएँ पैदा कीं। अस्पताल धीरे-धीरे केवल गंभीर रोगियों के उपचार का स्थान न रहकर आधुनिक स्वास्थ्य ज्ञान के केंद्र बनने लगे।

महिला चिकित्सा संस्थाएँ-

महिला स्वास्थ्य के क्षेत्र में संस्थागत चिकित्सा का विकास विशेष महत्व रखता है। सामाजिक परिस्थितियों के कारण महिलाओं को सामान्य अस्पतालों में उपचार प्राप्त करने में अनेक व्यावहारिक एवं सांस्कृतिक कठिनाइयाँ हो सकती थीं। ऐसी स्थिति में महिला-केंद्रित चिकित्सा संस्थाओं की स्थापना आवश्यक थी। उम्मेद फीमेल अस्पताल इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। "रेउ के मूल विवरण में भी उम्मेद फीमेल अस्पताल के निर्माण और उसमें महिला रोगियों के लिए उपचार व्यवस्था का उल्लेख मिलता है।"[6] यह संस्थान महिला स्वास्थ्य को स्वतंत्र सार्वजनिक आवश्यकता के रूप में स्वीकार किए जाने का प्रमाण है। महिला चिकित्सा संस्थाओं का विकास केवल चिकित्सा सुविधा का विस्तार नहीं था; इससे स्त्री-स्वास्थ्य, प्रसूति संबंधी आवश्यकताओं और महिलाओं की चिकित्सकीय पहुँच को सार्वजनिक चर्चा में स्थान मिला।

शिक्षा का सामाजिक प्रभाव-

शिक्षा के विस्तार का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव साक्षरता और ज्ञान के प्रसार के रूप में दिखाई देता है। किंतु इसका सामाजिक प्रभाव इससे कहीं व्यापक था। नई सामाजिक चेतना विद्यालयों और कॉलेजों ने विद्यार्थियों को पारंपरिक सामाजिक परिवेश से बाहर की दुनिया से परिचित कराया। आधुनिक इतिहास, विज्ञान, प्रशासन, कानून और सामाजिक विचारों का अध्ययन समाज के प्रति नई दृष्टि विकसित करने में सहायक हुआ। रोजगार के अवसर शिक्षा ने सरकारी सेवाओं में प्रवेश के अवसर बढ़ाए। प्रशासनिक कार्यालयों, रेलवे, विद्यालयों तथा अन्य आधुनिक विभागों में शिक्षित युवाओं की आवश्यकता बढ़ी। इसने शिक्षा को सामाजिक प्रतिष्ठा और रोजगार से जोड़ा। सामाजिक गतिशीलता शिक्षा ने कुछ समूहों को पारंपरिक सामाजिक सीमाओं से आगे बढ़ने का अवसर दिया। यद्यपि यह प्रक्रिया सीमित थी, फिर भी योग्यता आधारित रोजगार ने सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने का एक वैकल्पिक रास्ता उपलब्ध

[5] विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 2, पृ. 607.

[6] विश्वेश्वरनाथ रेउ, मारवाड़ का इतिहास, भाग 2, पृ. 607–608.

ISSN: 3108-0367 DOI: https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.4

कराया। आधुनिक मूल्यों का प्रसार विद्यालयी शिक्षा ने अनुशासन, समयबद्धता, स्वच्छता, सार्वजनिक उत्तरदायित्व तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण जैसी धारणाओं के प्रसार में योगदान दिया।

महिला शिक्षा का सामाजिक प्रभाव-

महिला शिक्षा का प्रभाव परिवार और समाज दोनों पर पड़ा। शिक्षित महिलाओं की संख्या बढ़ने के साथ बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और घरेलू निर्णयों में उनकी भूमिका के बदलने की संभावनाएँ बढ़ीं। महिला शिक्षा ने शिक्षिका, नर्स, सामाजिक कार्यकर्ता आदि भूमिकाओं के लिए नए अवसर उत्पन्न किए। इस प्रक्रिया ने स्त्री की सामाजिक पहचान को केवल घरेलू भूमिकाओं तक सीमित रखने वाली पारंपरिक धारणा को चुनौती दी। हालाँकि इस परिवर्तन को पूर्ण महिला मुक्ति के रूप में देखना उचित नहीं होगा। शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश की क्षमता सामाजिक वर्ग, आर्थिक स्थिति, स्थान और पारिवारिक दृष्टिकोण पर निर्भर करती थी। इसलिए महिला शिक्षा का प्रभाव परिवर्तनकारी भी था और सीमित भी। उसने नए अवसर खोले, लेकिन सामाजिक संरचना की सभी बाधाएँ समाप्त नहीं हुईं।

चिकित्सा संस्थाओं का सामाजिक प्रभाव- चिकित्सा संस्थाओं के विस्तार ने समाज के स्वास्थ्य व्यवहार में धीरे-धीरे परिवर्तन किया। अस्पतालों और औषधालयों की उपलब्धता ने उपचार को अधिक संस्थागत रूप दिया। टीकाकरण ने बीमारी की रोकथाम की अवधारणा को मजबूत किया। प्रयोगशाला और एक्स-रे जैसी सुविधाओं ने आधुनिक चिकित्सा को तकनीकी आधार प्रदान किया। महिला अस्पताल ने महिलाओं के लिए चिकित्सा सेवा की अलग आवश्यकता को स्वीकार किया। इसका परिणाम स्वास्थ्य संबंधी चेतना के विस्तार के रूप में देखा जा सकता है। हालांकि ग्रामीण समाज में पारंपरिक उपचार-पद्धतियों की भूमिका समाप्त नहीं हुई, लेकिन आधुनिक चिकित्सा संस्थाओं की प्रतिष्ठा धीरे-धीरे बढ़ती गई। इस प्रकार चिकित्सा का सामाजिक प्रभाव केवल मृत्यु-दर या रोग-उपचार जैसे आँकड़ों से नहीं मापा जा सकता। इसका एक महत्वपूर्ण परिणाम स्वास्थ्य के प्रति लोगों की अवधारणाओं में परिवर्तन था।

नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच अंतर-

मारवाड़ में संस्थागत विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसकी भौगोलिक असमानता थी। जोधपुर नगर में उच्च शिक्षा, बड़े अस्पताल और प्रशासनिक संस्थाओं की उपलब्धता ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक थी। रेउ के शिक्षा संबंधी आँकड़े बताते हैं कि बालिका विद्यालयों का एक बड़ा भाग जोधपुर के बाहर परगनों में भी था। इससे ग्रामीण पहुँच के विस्तार का संकेत मिलता है, लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि ग्रामीण और नगरीय शिक्षा की गुणवत्ता समान थी। चिकित्सा में भी बड़े अस्पतालों और विशेष सुविधाओं का केंद्रीकरण मुख्यतः प्रमुख नगरों में रहा। ग्रामीण क्षेत्रों में औषधालय और छोटी चिकित्सा संस्थाएँ अधिक महत्वपूर्ण थीं। इसलिए मारवाड़ में आधुनिक संस्थाओं के विस्तार को "सर्वव्यापी" न मानकर "क्रमिक और असमान" विस्तार के रूप में समझना अधिक उचित होगा।

जाति, समुदाय और शिक्षा

ISSN: 3108-0367 DOI: https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.4

शिक्षा का विस्तार सामाजिक समावेशन की एक सरल रेखीय प्रक्रिया नहीं था। अलग-अलग जातियों और समुदायों ने आधुनिक शिक्षा को अपने हितों के अनुसार अपनाया। कुछ समुदायों ने अपने विद्यालय स्थापित किए, कुछ ने छात्रवृत्ति और संस्थागत सहायता का उपयोग किया। मुस्लिम समुदाय में आधुनिक शिक्षा के लिए संगठित प्रयास इसका उदाहरण है। इससे शिक्षा सामाजिक एकीकरण के साथ-साथ सामुदायिक संगठन का साधन भी बनी। प्रत्येक समुदाय आधुनिक प्रशासन और रोजगार की बदलती परिस्थितियों में अपनी स्थिति मजबूत करना चाहता था। इस प्रक्रिया ने सामाजिक संरचना को पूरी तरह समाप्त नहीं किया, बल्कि उसके भीतर नई प्रतिस्पर्धा और नए अवसर पैदा किए।

आधुनिकता और परंपरा का संबंध-

मारवाड़ में आधुनिकता को परंपरा के पूर्ण निषेध के रूप में समझना उचित नहीं है। आधुनिक विद्यालयों के विस्तार के साथ संस्कृत पाठशालाएँ भी अस्तित्व में रहीं। इसी प्रकार आधुनिक चिकित्सा के विस्तार के बावजूद वैद्य और हकीम समाज में अपनी भूमिका निभाते रहे। अतः मारवाड़ का सामाजिक परिवर्तन "परंपरा से आधुनिकता" की सीधी यात्रा नहीं था। अधिक उचित यह कहना होगा कि परंपरा और आधुनिकता के बीच लगातार संवाद और समायोजन की प्रक्रिया चली। यही कारण है कि आधुनिक शिक्षा संस्थाओं में भारतीय भाषाओं, पारंपरिक विषयों और आधुनिक विषयों का मिश्रण दिखाई देता है। इसी तरह चिकित्सा क्षेत्र में भी आधुनिक अस्पतालों के साथ स्थानीय उपचार परंपराएँ लंबे समय तक बनी रहीं।

राज्य की भूमिका-मारवाड़ में शिक्षा और चिकित्सा संस्थाओं के विस्तार में राज्य की भूमिका निर्णायक थी। प्राथमिक शिक्षा के विस्तार की नीति, मिडिल स्कूल परीक्षा, विद्यालयों की स्थापना, चिकित्सा विभाग का संगठन, स्वास्थ्य विभाग और बड़े अस्पतालों की स्थापना—इन सभी में राजकीय पहल दिखाई देती है। राज्य द्वारा शिक्षा और चिकित्सा पर बढ़ता आर्थिक व्यय यह दर्शाता है कि इन क्षेत्रों को प्रशासनिक प्राथमिकता प्राप्त हो रही थी। लेकिन राज्य की भूमिका को केवल जनकल्याणकारी दृष्टिकोण से देखना भी अधूरा होगा। शिक्षित कर्मचारियों की आवश्यकता, प्रशासनिक दक्षता और आधुनिक राज्य की संस्थागत आवश्यकताएँ भी इन सुधारों के पीछे थीं। अतः शिक्षा और चिकित्सा में राज्य की पहल में जनकल्याण और प्रशासनिक आवश्यकता—दोनों तत्व विद्यमान थे।

शिक्षा और प्रशासन-शिक्षा के विस्तार ने मारवाड़ की प्रशासनिक व्यवस्था को भी प्रभावित किया। आधुनिक प्रशासन के संचालन के लिए पढ़े-लिखे कर्मचारियों की आवश्यकता थी। लेखा, कानून, न्याय, राजस्व, शिक्षा और चिकित्सा जैसे विभागों के विस्तार के साथ प्रशिक्षित मानव संसाधन की आवश्यकता बढ़ी। इस दृष्टि से विद्यालय और कॉलेज केवल सामाजिक संस्थाएँ नहीं थे; वे राज्य के लिए मानव संसाधन तैयार करने वाले केंद्र भी बन रहे थे। यही कारण है कि उच्च शिक्षा प्राप्त वर्ग को सरकारी सेवाओं में अवसर मिलने लगे। शिक्षा और प्रशासन के बीच यह संबंध आधुनिक राज्य निर्माण की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा था।

संस्थागत विकास की सीमाएँ-मारवाड़ में शिक्षा और चिकित्सा संस्थाओं का विस्तार उल्लेखनीय था, लेकिन इसकी सीमाओं को अनदेखा नहीं किया जा सकता। पहली सीमा असमान पहुँच थी। ग्रामीण समाज और दूरस्थ क्षेत्रों को शहरी क्षेत्रों की तुलना में सीमित सुविधाएँ प्राप्त थीं।दूसरी सीमा लैंगिक असमानता थी। बालिका विद्यालयों की संख्या

ISSN: 3108-0367 DOI: https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.4

बढ़ने के बावजूद महिलाओं की शिक्षा पुरुषों के समान स्तर पर नहीं पहुँच सकी। तीसरी सीमा सामाजिक-आर्थिक असमानता थी। गरीब परिवारों के लिए शिक्षा प्राप्त करना हमेशा आसान नहीं था।

चौथी सीमा परंपरागत मान्यताओं की थी। स्वास्थ्य और शिक्षा संबंधी आधुनिक विचारों को समाज में स्वीकार किए जाने में समय लगा। पाँचवीं सीमा संस्थागत केंद्रीकरण थी। उच्च शिक्षा और उन्नत चिकित्सा सुविधाएँ मुख्यतः बड़े शहरी केंद्रों में केंद्रित थीं। इन सीमाओं से स्पष्ट है कि संस्थागत विस्तार और सामाजिक परिवर्तन के बीच सीधा संबंध नहीं था। संस्था का अस्तित्व अपने आप में सामाजिक समानता सुनिश्चित नहीं करता।

समग्र सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण- यदि शिक्षा और चिकित्सा संस्थाओं के प्रभाव को एक साथ देखा जाए तो मारवाड़ में 20वीं सदी के दौरान सामाजिक परिवर्तन की तीन प्रमुख दिशाएँ दिखाई देती हैं। पहली दिशा ज्ञान का संस्थानीकरण थी। शिक्षा अब परिवार, समुदाय या धार्मिक संस्था तक सीमित न रहकर विद्यालय और कॉलेज के माध्यम से संगठित हुई।दूसरी दिशा स्वास्थ्य का सार्वजनिककरण थी। बीमारी और उपचार निजी अनुभव से आगे बढ़कर राज्य की जिम्मेदारी बनने लगे। टीकाकरण और स्वास्थ्य विभाग इसका उदाहरण हैं।तीसरी दिशा सामाजिक गतिशीलता थी। शिक्षा ने नए रोजगारों और नई सामाजिक भूमिकाओं के द्वार खोले। इन तीनों प्रक्रियाओं ने मिलकर मारवाड़ के समाज में आधुनिक चेतना के विकास के लिए आधार तैयार किया। मारवाड़ का अनुभव यह स्पष्ट करता है कि आधुनिक संस्थाएँ केवल प्रशासनिक ढाँचे नहीं होतीं। विद्यालय समाज के ज्ञान-संसार को बदलते हैं, जबकि अस्पताल स्वास्थ्य संबंधी धारणाओं और व्यवहारों को प्रभावित करते हैं। शिक्षा ने व्यक्ति और राज्य के संबंधों में भी परिवर्तन किया। शिक्षित व्यक्ति प्रशासनिक व्यवस्था को समझने, उसमें रोजगार प्राप्त करने और सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की अधिक क्षमता प्राप्त करने लगा। इसी प्रकार चिकित्सा संस्थाओं ने राज्य को लोगों के दैनिक जीवन के अधिक निकट ला दिया। टीकाकरण, स्वास्थ्य विभाग और अस्पतालों के माध्यम से राज्य का हस्तक्षेप सीधे व्यक्ति के शरीर और स्वास्थ्य से जुड़ने लगा। इसलिए शिक्षा और चिकित्सा को आधुनिक राज्य के सामाजिक विस्तार के दो महत्वपूर्ण माध्यम माना जा सकता है।

निष्कर्ष-

20वीं सदी में मारवाड़ रियासत में शिक्षा एवं चिकित्सा संस्थाओं का विकास सामाजिक परिवर्तन की महत्वपूर्ण प्रक्रिया थी। शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों से लेकर हाई स्कूल और कॉलेज तक संस्थागत विस्तार हुआ। पाठ्यक्रम में व्यावहारिक और व्यावसायिक विषयों को स्थान मिला। महिला शिक्षा का विस्तार हुआ और विभिन्न समुदायों ने आधुनिक शिक्षा को सामाजिक विकास के साधन के रूप में अपनाया। चिकित्सा क्षेत्र में अस्पतालों और औषधालयों का विस्तार हुआ। 1904 तक राज्य में 24 अस्पताल और 8 औषधालय कार्यरत थे। बाद के दशकों में विंढम अस्पताल, स्वास्थ्य विभाग और उम्मेद फीमेल अस्पताल जैसी संस्थाओं ने आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था को मजबूत किया। इन संस्थाओं का प्रभाव साक्षरता और रोग-उपचार तक सीमित नहीं था। इन्होंने सामाजिक चेतना, रोजगार, प्रशासनिक दक्षता, महिला भूमिका, स्वास्थ्य जागरूकता और सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित किया। फिर भी यह परिवर्तन पूर्ण और समान नहीं था। ग्रामीण क्षेत्रों, महिलाओं और आर्थिक रूप से कमजोर समूहों की संस्थागत पहुँच सीमित

ISSN: 3108-0367 DOI: https://doi.org/10.68013/nuj.vol.2.issue.4

रही। इसलिए मारवाड़ की आधुनिकता को उपलब्धियों और असमानताओं दोनों के संदर्भ में समझना आवश्यक है। अंततः कहा जा सकता है कि शिक्षा और चिकित्सा संस्थाएँ मारवाड़ में परंपरागत समाज और आधुनिक संस्थागत समाज के बीच सेतु का कार्य करती थीं। इन्होंने ज्ञान को संगठित किया, स्वास्थ्य को सार्वजनिक चिंता बनाया और समाज के कुछ वर्गों को नई सामाजिक एवं व्यावसायिक संभावनाएँ प्रदान कीं। स्वतंत्रता के बाद राजस्थान में शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासन के व्यापक विस्तार के लिए यही संस्थागत अनुभव महत्वपूर्ण आधारों में से एक बना।

संदर्भ-सूची-

1 विश्वेश्वरनाथ. रेउ, वि. ना. (1938–1940). मारवाड़ का इतिहास (भाग 1–2). जोधपुर: पुरातत्त्व विभाग।

2. भारत सरकार. (विभिन्न वर्ष). इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया: जोधपुर राज्य. भारत सरकार।

3. एडम्स, ए. (1900). पश्चिमी राजपूताना राज्य: मारवाड़, सिरोही एवं जैसलमेर का चिकित्सा-स्थलाकृतिक एवं सामान्य विवरण (द्वितीय संस्करण).

4. गहलोत, जे. एस. (1925). द हिस्ट्री ऑफ मारवाड़ (जोधपुर स्टेट). जोधपुर: हिंदी साहित्य मंदिर।

5. उपाध्याय, एन. एम. (1973). द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ जोधपुर स्टेट, 1800–1947 ए.डी. जोधपुर: इंटरनेशनल पब्लिशर्स।

6. भट्टाचार्य, डी. के. (वर्ष उपलब्ध नहीं). राजस्थान का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास. जोधपुर: राजस्थान ग्रंथागार।

7. शर्मा, जी. डी. (1977). राजपूत पॉलिटी: ए स्टडी ऑफ पॉलिटिक्स एंड एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द स्टेट ऑफ मारवाड़. नई दिल्ली: मुंशी राम मनोहरलाल।

8. सिंह, धनंजय. (1996). द हाउस ऑफ मारवाड़: द स्टोरी ऑफ जोधपुर. नई दिल्ली: रोली बुक्स।

9. बलजानी, एम. (2003). मॉडर्न इंडियन किंगशिप: ट्रेडिशन, लेजिटिमेसी एंड पावर इन जोधपुर. जेम्स करी।

10. हूजा, रीमा. (2006). ए हिस्ट्री ऑफ राजस्थान. नई दिल्ली: रूपा एंड कंपनी।

11. भार्गव, वी. एस. (1966). मारवाड़ एंड द मुगल एम्परर्स (1526–1748). नई दिल्ली: मुंशी राम मनोहरलाल।

12. शर्मा, पद्मजा. (1972). महाराजा मानसिंह ऑफ जोधपुर एंड हिज टाइम्स (1803–1843 ए.डी.). आगरा: शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी।